धोखेबाज

((एक संस्मरण))

आज मैंने जब धोखा खाया, पूरा जीवन याद आ गया

धोखेबाज तरह दो होते, एक देने एक खाने वाले; हमने खाने वाला बनकर मज़ा लिया जीवन भर छक के

बचपन में मेरी माँ अपने हाथो से बेसन के गोल गोल नमकीन लड्डू बनती थीं,
फिर उन्हें गरम पानी में खूब पकाती थीं और चाकू से काटकर मसाला लगाती थीं
उसके बाद बड़े प्यार से "खा ले मेरे मुन्ना धोखा" कहकर मुझे खिलाती थीं

उम्र बढ़ी, ज्ञान बढ़ा, लेकिन धोखा खाने की बचपनी आदत न छूटी
घर में मेरी परमेश्वरि बड़े प्यार से माँ वाला धोखा खिलाने लगी, और बाहर बहुत सारे लोग कई तरह के
इस तरह मेरा धोखा खाने का शौक परवान चढ़ता गया, पर शायद इसके कुछ और ठोस कारण भी थे

मैंने पाया:

1. धोखा खाना है आसान, पर देना उतना ही मुश्किल
   (जो हमारे जैसे कामचोर करने का कष्ट नहीं उठाते)
2. देना करे दूर लोगो से, खाना लावे पास है उनको
   (जो बुढ़ापे में बड़ा काम आता है)
3. खाना लावे अच्छी नींद, देने से उड़जावे नींद
   (दवा के पैसे बचते हैं, उम्र लम्बी होती है, हम सत्तरो पार कर लिए)
4. बुरे भले पहचान करावे, कम खर्चे यह ज्ञान दिलावे
   (समय पर पहचान हो जाने से नुकसान भी कम होता है)

और फिर:

धोखा तो सरकारों दीन्हा, पहरेदारों ने भी दीन्हा,
पंडित साधुन ने भी दीन्हा, शिक्षक लोगो ने भी दीन्हा,
छद्म दोस्तों ने भी दीन्हा, पद्मभूषणो ने भी दीन्हा,
बड़े बड़े सेठों ने दीन्हा, दुश्मन छोड़ बहुरि ने दीन्हा
नहीं दिया तो बस बच्चों ने, क्योंकि ईश वहां बसते है.

मूरख हैं वो जो कहतें है कि धोखे से बर्बाद हुए हम,
सच यह है वो नहीं जानते धोखा खाना एक कला है

अंत में:

धोखा एक दिन खाना ही है काया यह जब साथ न देगी,
इतना सा भी ज्ञान का न होना आपहि खुद धोखा खाना है,
उस धोखे को अनजाने ही हम प्रति दिन खा कर खुश होते,

इसलिए,

समझ बूझ कर धोखा खाओ, जीवन का आनंद उठाओ

गाहे गाहे (कभी कभी) इसे पढ़ा कीजे, दिल से बढ़कर कोई किताब नहीं

दुनिया जिसे कहते हैं, जादू का खिलौना है, मिल जाये तो मिटटी है, खो जाये तो सोना है ।

कभी किसी को मुक्कमिल जहाँ नहीं मिलता, कहीं ज़मीं तो कहीं आसमान नहीं मिलता ।

जिसे भी देखिये, हर शख्स अपने में गुम है, ज़ुबाँ मिली है मगर हम ज़ुबाँ नहीं मिलता ।

तेरे जहाँ में ऐसा नहीं की प्यार न हो, जहाँ उम्मीद हो इसकी वहां नहीं मिलता ।

परमेश्वरि

दिल के दुखने पे भी मुस्कराये जो, वो पत्नी नहीं परमेश्वरि कहावे है।
बूढ़े होने पे भी नखरे उठाये जो, वो पत्नी नहीं परमेश्वरि कहावे है।
नाती नातिन का सुख दिलावे जो, वो पत्नी नहीं परमेश्वरि कहावे है।
चौबी क्लाक ऊँगली पे नाचवे जो, वो पत्नी नहीं विक्टोरिया कहावे है।

विकास

भैंस ने पूछा क्या करें ये दो जन,
दोस्त बोली लाल पानी पी रहे ये जीने को ।
आयें, ये क्यों न घास खाकर खुश रहें हमारी तरह,
दोस्त बोली हो गया है इनका विकास ।

खाट वाट

राहुल जी ने खाट लगा दी,
मोदी जी ने वाट लगा दी ।
चले थे भ्रष्टाचार मिटाने,
बढ़ा दिये भ्रष्टाचारी ।

माँ बेटा और गोली

गोली बेटे को हि नहीं, माँ को भी लगती है ।
बेटा तो चल देता है, पर माँ तड़पती रहती है ।